वंदे मातरम्

राष्ट्र सेविका समिति

:: प्रधान कार्यालय ::

देवी अहल्या मंदिर, धंतोली, नागपूर - 440012

दूरभाष : 0712-2442097 फॅक्स : 0712-2423852

वार्ता

वर्ष : 23 अंक : 62 युगाब्द : 5122 दिनांक : 01.03.2021

जय जय जननी के जयकारे, राष्ट्र सेविका कभी न हारे

"शिव भावेन जीव सेवा"

सेवा है यज्ञ कुंड, समिधा सम हम जले

राष्ट्र सेविका समिति का योग प्रशिक्षण शिविर-

पूरे विश्व में 21 जून यह दिन अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। उसी उपलक्ष्य में 21 जून के पूर्व 7 दिन तदनुसार 14 से 20 जून तक सात दिवसीय योग शिविर का आयोजन सभी प्रांतों में किया गया था।

हम नहीं थे भोगवादी, मन हृदय से थे विरागी
योग के वैभव शिखर पर, थे सभी संतुष्ट त्यागी।

यह संदेश लेकर यह शिविर, घर, गली, मोहल्ला, अपार्टमेंट, शाखा परिसर में लिया गया।

इस शिविर के पूर्व तैयारी के लिए सात दिन के सात विडियोज तैयार करके हर प्रांत को भेजे गये थे। जिसे देखकर प्रांत में सेविकाओं को प्रशिक्षित किया। विविध व्याधियों से मुक्ति पाने के लिए विशेष आसनों पर ध्यान दिया गया। इस शिविर का उद्घाटन समिति की अखिल भारतीय सह कार्यवाहिका मा. सुलभाताई देशपाण्डे के बौद्धिक सत्र से हुआ तथा समापन सत्र में विवेकानंद केन्द्र की उपाध्यक्ष निवेदिता भिडे का मार्गदर्शन मिला।

योग शिविर की विशेषता-

1. 2 वर्ष की आयु से लेकर 90 वर्ष की आयु तक लोग जुडे।
2. पश्चिम महाराष्ट्र में माँ बेटी योग शिक्षा के रूप में 7 जोड़िया थी।
3. गुजरात प्रांत के 5 वर्ष के मानसिक रूप से बीमार बच्चे ने योगाभ्यास किया।
4. मध्य भारत में10 दिव्यांग बच्चों ने नियमित योगाभ्यास किया।
5. पश्चिम महाराष्ट्र में तीन परिवार की तीन पीढ़ियों ने एक साथ योगाभ्यास किया।
6. 14 जून से 20 जून तक 39 प्रांतों के 233 विभाग तथा महानगरों से 51761 प्रतिदिन शिविरार्थी संख्या रही।
7. 15 वर्ष से कम आयु की संख्या 8800 17 %
   15 वर्ष से 40 वर्ष की आयु 2275 44%
   40 वर्ष से ऊपर की आयु 20187 39%
   कुल 51791 में 18457 बंधु वर्ग थे।

अखिल भारतीय सर्वेक्षण वृत्त

वर्तमान में पूरे विश्व में हम कोरोना महामारी से जूझ रहे हैं। इस स्थिति को देखते हुए राष्ट्र सेविका समिति के तरूणी विभाग द्वारा महिलाओं का एक अखिल भारतीय सर्वेक्षण किया गया, ये सर्वेक्षण देश के सभी राज्यों में और 567 जिलों में संपन्न हुआ। यह सर्वेक्षण 3 बिंदुओं पर आधारित था-

1. कोरोना के कारण आपको क्या समस्या है ?
2. इस पर समाधान क्या किया जा सकता है ?
3. आगे की दृष्टि से कुछ सुझाव।

पूरे देश की 1220 तरूणियों ने 16855 महिलाओं और युवतियों का सर्वेक्षण किया। प्रत्यक्ष मिलकर या दूरभाष द्वारा ये सर्वेक्षण किया गया। यह सर्वेक्षण दिनांक 25 जून से 4 जुलाई, 10 दिनों में किया गया। यह सर्वेक्षण 7 प्रकार में किया गया, जैसे- गृहिणी, ग्रामीण, वनवासी, आर्थिक रूप से संपन्न बस्ती में रहने वाली, नौकरी करने वाली, सेवाबस्ति महिलाओं की समस्या, युवतियों की समस्या इत्यादि।

इस सर्वेक्षण का प्राथमिक विश्लेषण इस प्रकार तैयार किया गया है। प्राथमिक विश्लेषण के अनुसार मोटे स्तर पर 291 समस्या, 209 समाधान तथा 155 सुझाव आये हैं। आई हुई समस्याओं को आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, मानसिक, कृषि विषयक, अन्य ऐसे समस्याओं में बांटा गया है। 16855 महिलाओं और युवतियों में 1683 ने बताया कि हमें कोई समस्या नहीं है।

इस सर्वेक्षण के कारण व्यापक स्तर पर महिलाओं से संपर्क करना। उनकी स्थिति एवं समस्याएं जानना, सकारात्मक एवं नकारात्मक बातें जानने का बहुत बड़ा अवसर प्राप्त हुआ है। आशा है यह सर्वेक्षण समाज के विभिन्न गटों की समस्या सुलझाने के लिये तथा कुछ विषयों को अध्ययन करने के लिए अवश्य काम आएगा।

"अखिल भारतीय कार्यकारिणी प्रतिनिधि सभा 2021"

समिति की अखिल भारतीय कार्यकारिणी प्रतिनिधि सभा माघ शुद्ध अष्टमी तदनुसार दिनांक 19.02.21 से 21.02.21 को रथ सप्तमी से दास बोध जयंती तक वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी की उपस्थिति में संपन्न हुई। कोविड-19 के कारण यह बैठक सीमित संख्या में नियमों का पालन करते हुए संपन्न हुई। यह बैठक लगभग एक वर्ष के अंतराल में प्रत्यक्ष एकत्रित हुई अतः सभी के मन प्रफुल्लित थे। बैठक का बोध वाक्य था ''श्रम निष्ठा कल्याणी है।''

बैठक प्रारंभ करने के पूर्व मा. शान्ता आक्का जी ने उन सभी आत्मिय जनों को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए अपने भाव सुमन समर्पित किये।

प्रमुख कार्यवाहिका मा. सीता गायत्री जी ने अपने प्रतिवेदन में कहा कि कोविड-19 महामारी ने पूरे विश्व को मानो निश्चल कर दिया। मार्च 22 जनता कर्फ्यू के बाद मानो गतिशील पहिये थम से गए। लॉकडाऊन डरावना दृश्य और कोविड का भय लोग कुछ समय के लिए सहम से गए, परन्तु मराठी में समिति का एक गीत है।

'सेविका न ही, ही तर सरिता, अर्पित अपुले निज जीवन हे ध्येया कारिता'

सेविका यह सरिता सम है, जैसी सतत प्रवाहित रहती है, उसका एक ही धर्म है, मार्ग में कोई बाधा आई तो वह रूकती नहीं है, बल्कि मार्ग बदलकर चलती है। मार्ग में यदि पर्वत भी आए तो उसे फोड़कर अपना मार्ग निकाल कर लक्ष्य तक पहुंचती है।

अतः हम भी कोरोना काल में रूके नहीं, कार्य करते रहे, ध्येय पथ पर बढ़ते रहे, मार्ग बदल दिया। आधुनिक संज्ञान का उपयोग करते हुए (ऑनलाइन) आभासी कार्य प्रारंभ किया। सेवाकार्य में भी सेविकाओं का अनमोल सहयोग रहा एवं अनेक कार्यक्रम उसी माध्यम से संपन्न हुए।

वं. प्रमुख संचालिका मा. शांता आक्का जी का पाथेय

हम सब समिति की गंगोत्री से अपना अपना कलश भरकर ले जा रहे हैं। मुझे गर्व एवं संतोष है कि विपरित परिस्थितियों में भी बिना डरे आप सब आए, आज महत्व का दिन दासबोध जयंती है। रामदास स्वामी ने दासबोध में कहा है - 'उत्कट भव्य तेची ध्यावे, मिळमिळीत अवधे टाकावे, निस्पृहता पणे विख्यात व्हावे भूमंडळी। जीवन में जो उत्कट और भव्य है उसे स्वीकार करें तथा तुच्छ एवं निरूपयोगी का बहिष्कार करें, कोई भी कार्य योजनाबद्ध, निस्प्रियता से करें। हमने कोरोना काल में सेवा कार्य किया, हम डरे नहीं। इस काल में हमें नई जीवन दृष्टि मिली। अन्यों को भी हमने नई जीवन दृष्टि देने का प्रयास किया। व्यक्तिगत प्रतिष्ठा छोड़ संगठन का विचार करना। आसक्त बुद्धि छोड़ निरासक्त बुद्धि से कार्य करना। स्वदेशी चिंतन होना अनिवार्य है। मातृभाषा के महत्व के साथ ही परिवार जीवन में छः बिंदुओं पर चिंतन आवश्यक है- भाषा, भूषा, भजन, भोजन, भवन, भ्रमण, इन छः बिंदु पर स्वदेशी चिंतन करना होगा।

आज भारत के अंदर एवं बाहर सोशल मिडिया वार चल रहा है। प्रबुद्ध लोगों के बीच भ्रम फैलाकर भेद निर्माण किया जा रहा है। हमें इन सबका सामना करना होगा। अतः सजग रहना होगा। भारत का श्रेष्ठ चिंतन स्थापित कर हमारा ध्येय ''तेजस्वी हिंदु राष्ट्र पुनःनिर्माण'' हेतु सतत प्रयत्नशील रहना होगा।

राष्ट्र सेविका समिति की तृतीय प्रमुख संचालिका वंदनीय उषाताई चाटी जी के तृतीय पुण्यतिथी के अवसर पर 'स्वर उषा' इस कार्यक्रम का आयोजन 31अगस्त 2020 को किया गया ।

वंदनीय उषाताईजी नागपूर आकाशवाणी की गायक कलाकार रह चुकी है। वह अनेक वर्ष समिति की अखिल भारतीय गीत प्रमुख के नाते भी कार्यरत थी। बुलंद लेकिन मधुर आवाज यह उनके लिए भगवान की देन थी. अनेक वर्गो में, बैठकों में उन्होंने सेविकाओं को गीत सिखाये हैं। हर गीत के भावानुकूल स्वर लगाने के कारण आज भी उनकी आवाज कानों में गूंजती है।

उनके प्रथम और द्वितीय पुण्यतिथी पर प्रत्यक्ष कार्यक्रम संपन्न हुए, परंतु इस वर्ष 31अगस्त 2020 को कोरोना के कारण प्रत्यक्ष संगीत सभा का आयोजन संभव नही था, इसलिये वंदनीय उषाताईजी ने जिन गीतों को स्वर लगाया और भारत मे जिन सेविका बहनों ने उनसे गीत सीखे थे ऐसी सेविकाओं ने अपने आवाज मे गीत के विडियो भेजे। इस कार्यक्रम मे सात प्रान्तों से दस सेविकाओं ने गीत प्रस्तुति दी और वंदनीय उषाताई जी को संगीतमय सुमनांजली अर्पित की।

इस स्वर उषा कायक्रम की संकल्पना अ.भा. सह कार्यवाहिका मा. चित्रा ताईजी जोशी की थी तथा निवेदन श्रीमति मेधा नांदेडकर जी ने किया था।

विजया दशमी कार्यक्रम

'चिर विजय की कामना ही राष्ट्र का आधार है।' इस उद्घोष के साथ, प्रमुख केन्द्र नागपुर के साथ पूरे भारत में विजयादशमी उत्सव ऑनलाइन शाखाओं में संपन्न हुआ। यह वह शुभ अवसर था जब एक बार पुनः 25 अक्टूबर को विजयादशमी थी। विजयादशमी का विषय था, ''आत्मनिर्भर भारत''।

सायं 4 बजे नागपूर शाखा में वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी की उपस्थिति में विजयादशमी उत्सव ऑनलाइन संपन्न हुआ। जिसमें पूरे भारत की सेविकाएं एवं अन्य लोग सहभागी हुए। इस कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि वं. प्रमुख संचालिका जी के उद्बोधन के साथ-साथ प्रचार विभाग की कार्यकर्ता पोस्टर एवं भाषण का अनुवाद करते हुए ट्वीटर ट्रेडिंग भी कर रही थी, जो कि एक प्रशंसनीय प्रयास था।

सुखद संवाद :

इस वर्ष कोविड-19 ने पूरे भारत ही नहीं विश्व को घरों के अंदर सीमित कर रख दिया, ऐसे समय में सेविकाओं का मनोबल बना रहे, इस हेतु संगठन प्रमुखों ने ''संवाद'' इस कार्यक्रम की योजना बनाई। प्रत्येक सेविका से ऑनलाइन संपर्क कर उसका हालचाल जानने एक श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम लिया गया। केन्द्रीय कार्यकारिणी की प्रमुख दायित्व युक्त कार्यकर्ताओं ने दो-दो प्रांत बांटकर प्रांत के विभाग स्तर तक के कार्यकर्ताओं से अनौपचारिक चर्चा कर उनका मनोबल बढ़ाया। प्रांत कार्यकारिणी ने इसी श्रृंखला में जिला, नगर एवं शाखाओं तक संवाद की कड़ी को जोड़ा। इस कार्यक्रम के कारण सभी सेविकाओं का आत्मविश्वास जागा एवं उनका मनोबल बढ़ा। घर में रहकर भी हम अकेले नहीं संगठन के साथ है, यह सुखद अनुभूति उन्हें हुई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं राष्ट्र सेविका समिति

यह स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। 1986 के 34 वर्षों के बाद भारतीय मूल चिंतन पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आत्मनिर्भरता की ओर प्रथम कदम है। यह शिक्षा नीति राष्ट्र हितों की रक्षा करने में सिद्ध होगी, यह पूर्ण विश्वास है।

समिति कार्य व्यक्ति निर्माण का कार्य है। नित्य शाखा के कार्यक्रम के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा देने का कार्य 1936 से चल रहा है। सामाजिक संगठन के नाते, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन शीघ्र हो, यह नैतिक दायित्व समिति सेविकाओं का है। इस दृष्टि से केन्द्र कार्यकारिणी की बैठक में 3 सितम्बर को अखिल भारतीय स्तर पर चिंतन सत्र (वेबिनार) करने का विचार किया गया तथा 5 कार्यकर्ताओं की कोर टीम बनाई गई तथा योजना को क्रियान्वित करने बैठके हुई। 3 सितम्बर को मा. अतुल जी कोठारी का मार्गदर्शन था। केन्द्रीय कार्यकारिणी, क्षेत्र की कार्यकर्ता, केन्द्रीय बौद्धिक टोली, बौद्धिक प्रमुख, सहबौद्धिक प्रमुख तथा प्रत्येक प्रांत से शिक्षा क्षेत्र की एक बहन ऐसे कुल 127 संख्या थी। पश्चात प्रांत स्तर पर कोर टीम बनाई गई। 29 सितम्बर को वक्ता प्रशिक्षण का आयोजन कर हर प्रांत में 3 विषयों को लेकर वक्ता भेजे गए। विषय थे - 1. (प्राथमिक माध्यमिक) स्कूली शिक्षा 2. मातृभाषा 3. उच्च शिक्षा। वक्ता प्रशिक्षण में 76 संख्या थी। 3 अक्टूबर से 18 अक्टूबर यह कार्यक्रम चला। इस कार्यक्रम में 93 वक्ता थे। समिति कार्यकर्ताओं की संख्या 2285, शिक्षा क्षेत्र से 2837 कुल मिला 5122 लोगों तक यह विचार पहुंचे। विभाग स्तर पर इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया, जिसमें मात्र 2 विषय रखे गए शालेय शिक्षा एवं मातृभाषा।

इन कार्यक्रमों हेतु प्राचार्य, डायरेक्टर, प्रधानाचार्य, बोर्ड मेंबर, अभिभावक इन सबसे संपर्क कर जागरण का कार्य किया गया और कस्तूरी रंजन की रिपोर्ट का विस्तृत अध्ययन करने कहा गया।

शिक्षा वर्ग का मन बनाने कार्यशालाओं का आयोजन अभिभावकों के साथ समुपदेशन एवं सामूहिक चर्चा से समस्या (प्रश्न) का समाधान विस्तार से किया गया। इस हेतु 19 नवम्बर को मुकुल जी कानेटकर का मार्गदर्शन अत्यंत प्रभावी रहा।

आंकड़ों की दृष्टि से देखें तो 37 प्रांतों से 96 वक्ता। समिति कार्यकर्ता 2365, शिक्षा क्षेत्र 20917, जिला स्तर में कुल कार्यक्रम 262, कार्यक्रम में उपस्थित कार्यकर्ता 3988, अन्य शिक्षा क्षेत्र की बहनें 7879 रहीं।

हमें संतोष है कि हम इस विषय को नीचे के स्तर तक पहुंचाने में सफल रहे।

मा. कुसुमताई जन्म शताब्दी समारोह -

समिति की अखिल भारतीय प्रथम बौद्धिक प्रमुख एवं प्रार्थना की रचयिता मा. कुसुमताई जी का जन्मशती वर्ष दिनांक 16 फरवरी 2020 से प्रारंभ हुआ।

अतः 16 फरवरी 2020 से 16 फरवरी 2021 तक के जन्म शताब्दी वर्ष में अधिकाधिक सेविकाओं को शुद्ध प्रार्थना कंठस्थ करना एवं करवाना निश्चित हुआ। इसी श्रृंखला में सभी प्रांतों में दिनांक 1 मई से 31 मई तक प्रांत, जिला, नगर के दायित्व युक्त कार्यकर्ताओं के लिये ''समिति प्रार्थना' इस विषय पर बौद्धिक हुए। कुल 35 कार्यक्रमों में 4066 सेविका एवं 179 बंधुओं की सहभागिता रही। दिनांक 14.02.2021 को दोपहर 4.45 को संपूर्ण भारत वर्ष में एक साथ ऑनलाइन तथा प्रत्यक्ष शाखाओं में प्रार्थना हुई। इसमें कुसुम ताईजी के परिवार जन भी सम्मिलित हुए। दिनांक 16.02.21 को उनके निवास स्थान पर संपन्न कार्यक्रम अत्यंत भावपूर्ण रहा। कुसुमांजली यह मा. कुसुमताई जी द्वारा रचित गीतों का गायन निवेदन के साथ तैयार किया गया। वं. प्रमुख संचालिका जी ने इस कार्यक्रम में उसका लोकार्पण किया।

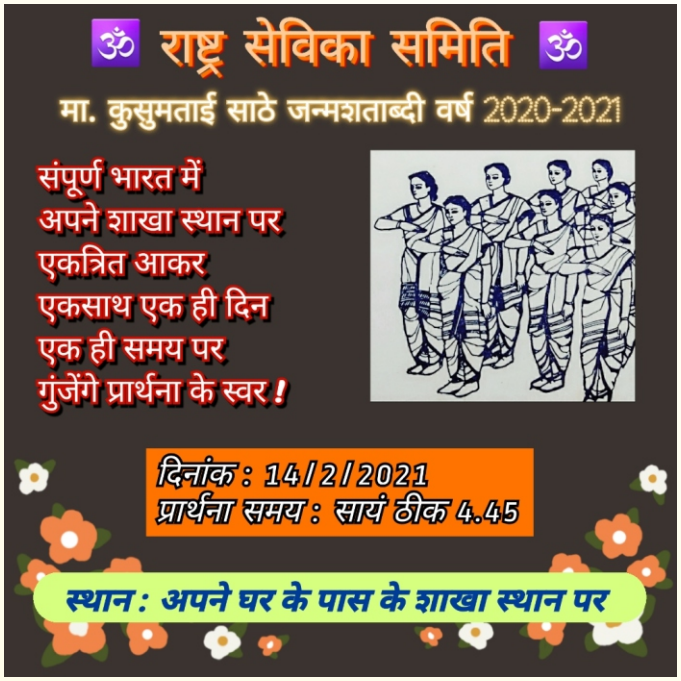

प्रकाशन विभाग

1. वं. ताई जी की जीवनी कृतज्ञ मी कृतार्थ मी का अंग्रेजी अनुवाद Grateful and Gratified का लोकार्पण दिनांक 19.02.21 को संपन्न हुआ। इस पुस्तक के पुर्नलेखन में मा. अलकाताई इनामदार एवं उनके पति का सहभाग था, अतः उन दोनों का सम्मान मा. प्रमिलाताई जी द्वारा किया गया।
2. समिति 'संदर्भ ग्रंथ' का संकलन कर प्रकाशित करने भेजा गया।
3. वं. मौसी जी के रामायण प्रवचनों का पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद यू.एस.ए. में हुआ।
4. Status of Women in Bhartiya Family पुस्तक का विमोचन किया गया तथा मा. मनीषा कोठे एवं मा. लीना गहाणे का सत्कार किया गया।

:: तेजस्वी हिन्दू राष्ट्र ::

देवदुर्लभ वीर व्रत ले संघटित हो देश सारा
विश्वव्यापी ध्येय पथ पर राष्ट्र विजयी हो हमारा ॥धृ॥

सत्य पथ अपना सनातन, नित्य नूतन चीर पुरातन
व्यष्टी से परमेष्ठी तक है, चेतना का एक स्पंदन
वेदवाणी के स्वरो में, गुंजती संस्कार धारा ॥1॥

सब सुखी हो सब निरामय, इस धरा का मूल चिंतन
विश्व को मांगल्य देने, कर दिया सर्वस्व अर्पण
गरल पिकर शिव बने हम,शक्ती का यह रूप न्यारा ॥2॥

जननी है वसुधा हमारी,मातृ मन का भाव जागे
एकता का मंत्र देकर,जगती मे एकात्म साधे
विश्वगुरू के परम पद पर, हो प्रतिष्ठित देश प्यारा ॥3॥

श्री राम जन्मभूमि भूमिपूजन कार्यक्रम

राम तुम्हारी श्रद्धा का संबल,
जनमन का चिर आनंद बना।
पूर्ण हुआ संकल्प हिन्दु का,
जन्मभूमि का द्वार खुला॥

सैकड़ों वर्षों से हिंदु समाज चातक पक्षी की तरह **श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण** की प्रतिक्षा कर रहा था। हजारों लोगों की तपस्या, साधना, बलिदान के फलस्वरूप 5 अगस्त 2020 को मा. प्रधानमंत्री जी श्री नरेन्द्र मोदी जी के करकमलों से जन्मभूमि पूजन हुआ। वं. मौसीजी की भी आंतरिक इच्छा थी कि रामलला बंधन मुक्त हो, भव्य मंदिर बने, यह हमारा सौभाग्य है कि अखिल भारतीय महिलाओं के प्रतिनिधि स्वरूप वं. प्रमुख संचालिका जी को वहां आमंत्रित किया गया, इस स्वर्णिम क्षण में वे वहां उपस्थित थी। 15 जनवरी से 27 फरवरी 2021 तक राममंदिर हेतु समर्पण निधि के जागरण (संकल्प) अभियान में भी अपनी सेविका बहनों ने उत्साह से सहभाग लिया है, अभी भी बहनें कार्य कर रही हैं। रामभक्तों ने भारत के हर नगर, हर शहर, हर गाँव में रामरथ यात्रा, प्रभात फेरी एवं शोभायात्रा निकालकर राममय वातावरण का निर्माण कर धरती आकाश को रामधुन से गुंजा दिया, रामरंग से भर दिया।

समिति सेवा कार्य

"शिव भावेन जीव सेवा" यह महामंत्र 19 वीं सदी में रामकृष्ण परमहंस जी ने संपूर्ण मानव जाति को प्रदान किया और इसी महामंत्र को चरितार्थ करते हुए संपूर्ण भारत वर्ष में हजारों की संख्या में सेवा कार्य प्रारंभ किये गये एवं कोरोना संकट से मानव जाति को उबारने का महत प्रयास किया गया।

राष्ट्र सेविका समिति एवं समिति द्वारा संचालित प्रतिष्ठानों के द्वारा हजारों की संख्या में सेवा कार्य का श्री गणेश हुआ। अन्न (राशनकीट) तैयार भोजन, पीपीई कीट, मॉस्क, सेनेटाईजर, काढ़ा एवं अन्य औषधियाँ जरूरत मंद लोगों तक पहुंचाई गई। केवल मानवी सेवा ही नहीं अपितु पशु पक्षियों के लिये भी भोजन की व्यवस्था समिति की सेविकाओं ने की। गो ग्रास, कुत्ते, बंदर, कबूतरों आदि के लिये खाद्य सामग्री रखना, इतना ही नहीं समस्त आपदा का सामना करते हुए निर्भय होकर हॉस्पिटल, पुलिस स्टेशन तथा अन्य सामाजिक स्थानों का स्वयं सेनिटाईजेशन किया। अस्पतालाओं में मरीजों की सेवा, विद्यार्थी एवं मजदूर अपने घरों से दूर फंसे हुए थे, उनसे संपर्क साधकर उनकी आवश्यकतानुसार उनके भोजन, पानी एवं यातायात में सहायता प्रदान की। अपनी सीमाओं को लांघकर श्मशान भूमि में पहुंचकर सेविकाओं ने कोरोना के कारण देह त्यागने वाले मृत देहों का अंतिम संस्कार करने का साहसिक कृत्य भी किया। सेविकाओं ने आपदा को आव्हान समझकर एक अनोखा इतिहास रचा।

जय जय जननी के जयकारे, राष्ट्र सेविका कभी न हारे